श्री कृष्णदास का शिवानन्द आश्रम में आगमन

श्री श्री नीम करोली बाबा जी महाराज के शिष्य तथा भक्ति-गीतों के सुपरिचित गायक श्री कृष्णदास वर्ष २००६ के विशेष क्रिसमस कार्यक्रम की अवधि में शिवानन्द आश्रम पधारे।

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पवित्र समाधि मन्दिर में हुए दो सन्ध्याकालीन सत्संग-कार्यक्रमों में भक्ति-संगीत के माध्यम से उन्होंने अपने इष्टदेव श्री हनुमान् जी तथा अपने गुरुदेव के प्रति अपनी एकनिष्ठ भक्ति व्यक्त की। समस्त श्रोताओं को ऐसा प्रतीत हुआ कि वे वहीं पहुँच गये जहाँ श्री हनुमान् जी विराजते हैंह्लह्लश्री राम के चरणों में।

अपने पूज्य गुरुदेव नीम करोली बाबा (जिनके निकट-सम्पर्क में वह कुछ वर्षों तक रहे थे) से सम्बन्धित अपने अनुभव सुनाना उन्हें बहुत प्रिय है। उन्होंने वह घटना भी सुनायी जब उन्होंने वर्ष १९६९ में मुनरो (न्यूयार्क, अमेरिका) में डा. मिश्रा के आनन्द आश्रम में प्रथम बार परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से भेंट की थी। उसी अवसर पर उन्होंने अपने जीवन में प्रथम बार उनके मुख से लयबद्ध धुन में पवित्र मन्त्र 'श्री राम जय राम जय जय राम' का जप करते हुए सुना था। वह उनके जीवन का एक निर्णायक क्षण था। तभी उन्हें भगवन्नाम का गायन करते रहने की प्रेरणा मिली थी। आज जब वह भगवन्नाम का गान करते हैं, तब यह भगवान् तथा अपने परम प्रिय गुरुदेव श्री नीम करोली बाबा के प्रति उनके अन्तरतम से नि:सृत भावोद्गार ही होते हैं। भारतवर्ष में यह बात प्रचलित है कि जब वह गाते हैं, तब देवता गण स्वयं उनके भक्ति-गीत सुनने के लिए आते हैं।

हमारे सम्मानीय अतिथि बन कर श्री कृष्णदास शिवानन्द आश्रम में तीन दिनों तक रहे। अन्तिम दिन उन्होंने पूरे एक घण्टे तक भजन हाल में महामृत्युंजय मन्त्र का जप किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं से पूरा भजन हाल भर गया था। सभी श्रोताओं ने उनके गायन के समय सचमुच भगवान् की उपस्थिति का अनुभव किया।

हम श्री कृष्णदास जी के उत्तम स्वास्थ्य तथा शान्ति से परिपूरित और प्रसन्नतामय दीर्घ जीवन की कामना करते हैं! हम परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से प्रार्थना करते हैं कि वह श्री कृष्णदास जी को भविष्य में अनेकानेक वर्षों तक अपने भक्तिमय कीर्तन द्वारा अधिक-से-अधिक व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान करते रहने की क्षमता प्रदान करें! पुन: शिवानन्द आश्रम में पधारने के लिए हम उन्हें आमन्त्रित करते हैं।

होली*

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

प्राचीनकालीन भारतवर्ष में नरभक्षी व्यक्तियों के भी समुदाय रहा करते थे। उनके कारण अनेक निर्दोष लोगों के प्राण संकट में पड़ जाते थे तथा समाज में विध्वंसक स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। ऐसे नरभक्षी व्यक्तियों में होलिका या पूतना भी थी। उसे बालकों का भक्षण करने में बहुत सुख मिलता था। भगवान् कृष्ण ने उसका वध किया और इस प्रकार उन्होंने अनेक बालकों की रक्षा की। आज भी होली की अग्नि में होलिका का पुतला जलाया जाता है। दक्षिण भारत में मिट्टी से निर्मित कामदेव की मूर्ति जलायी जाती है। होली के त्योहार का मूल यही है।

फाल्गुन माह (फरवरी-मार्च) की पूर्णिमा के लगभग दस दिन पूर्व से इस त्योहार का श्रीगणेश हो जाता है; परन्तु सामान्यत: इस पूर्णिमा को समाप्त होने वाली इस अवधि के अन्तिम तीन-चार दिनों में ही इसे विशेष रूप से मनाया जाता है। यह त्योहार हिन्दुओं का वसन्तोत्सव है। वसन्त ऋतु में सभी पेड़-पौधे मीठी सुगन्ध वाले सुन्दर-सुन्दर फूलों से ढक जाते हैं। वे भगवान् के अमित-अक्षर सौन्दर्य और महिमा का ही उद्घोष करते हैं तथा हमारे अन्दर आशा-प्रसन्नता का संचार करके नवीन जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। सबके अन्तर्वासी तथा सर्जक भगवान्ह्नह्नजो इन फूलों के मनमोहक रूपों में छिपे रहते हैंह्नह्नका अन्वेषण करने की प्रेरणा हमें इन (फूलों) से प्राप्त होती है।

दक्षिण भारत में होली को कामदहन के नाम से भी जाना जाता है; क्योंकि इसी दिन भगवान् शिव ने कामदेव का दहन किया था।

होली के त्योहार से सम्बन्धित एक अन्य कथा के अनुसार एक बार होलिका नाम की एक राक्षसी के भक्षण हेतु एक बुढ़िया के पौत्र की बलि दी जानी थी। एक साधु ने बतलाया कि राक्षसी को गाली की भाषा से काबू में किया जा सकता है। बुढ़िया ने अनेक बालकों को एकत्र करके उनसे राक्षसी को गालियाँ देने को कहा। गालियाँ सुनते ही वह मर कर भूमि पर गिर गयी। बालकों ने उसके मृत शरीर को जला कर खूब आनन्द मनाया।

इसी कथा से जुड़ी हुई एक अन्य कथा है भगवान् नारायण के परम भक्त प्रह्लाद की तथा होलिका के हाथों होने वाली मृत्यु से उनके सुरक्षित बच निकलने की। प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र के भक्ति-भाव को नष्ट करके उसे सांसारिक प्राणी बनाने हेतु उसे कई प्रकार से दण्ड दिया था। प्रत्येक बार वह अपने प्रयास में विफल हुआ। अन्तत: उसने अपनी बहन होलिका (जिसे अग्नि के अन्दर भी अदग्ध रहने का वरदान प्राप्त था) से कहा कि वह प्रह्लाद को अपनी गोद में ले कर दहकती हुई अग्नि में प्रवेश कर

* इस वर्ष होली ५ मार्च २००७ को पड़ रही है।

जाये। होलिका ने वैसा ही किया। होलिका तो जल गयी; परन्तु भगवान् नारायण की कृपा से प्रह्लाद बच गये और अग्नि से हँसते हुए निकल आये।

प्रत्येक वर्ष होली जला कर इसी घटना के दृश्य को प्रदर्शित किया जाता है। होली की अग्नि हमें इस बात का स्मरण दिलाती है कि भगवत्प्रेमी सदा सुरक्षित रहते हैं तथा उन्हें उत्पीड़ित करने वाले व्यक्ति जल कर भस्म हो जाते हैं। होलिका के जल कर मर जाने के पश्चात् जनसाधारण ने उसे गालियाँ दी थीं तथा भगवान् नारायण तथा उनके भक्तों की प्रशंसा के गीत गाये थे। आज हम उस घटना का अनुकरण करते हुए गालियाँ तो देते हैं; परन्तु भगवान् और उनके भक्तों के प्रशंसा-गीत गाना भूल जाते हैं।

उत्तर भारत में लोग अति प्रसन्न मुद्रा में गीले रंग (रंगीन जल) से होली खेलते हैं। चाचा भतीजों पर पिचकारी से रंग डालते हैं, भतीजे गुलाल से चाचाओं के चेहरे रंग देते हैं। भाई बहनों तथा भतीजों के साथ होली खेलते हैं।

इस त्योहार के अवसर पर लकड़ी के बड़े-बड़े ढेर लगाये जाते हैं और रात के समय उन्हें जलाया जाता है। चारों ओर 'होली है, होली है' के स्वर का कोलाहल सुनायी पड़ता है। लोग सड़कों पर खड़े हो कर वहाँ से निकलने वाले प्रत्येक व्यक्तिह्नह्नचाहे वह कोई भी हो, अमीर या अधिकारीह्नह्नके शरीर और कपड़ों को पिचकारी से रंग फेंक कर रँग देते हैं। होली के दिन कोई प्रतिबन्ध नहीं रहता। यह त्योहार यूरोपवासियों के 'अप्रैल-फूल दिवस' से मिलता-जुलता है। इस अवसर पर लोग विशेष होली-गीतों की रचना करते हैं और उन्हें गाते हैं।

होली के दिनों में लोग अपने-अपने घरों की सफाई करते हैं तथा अनुपयोगी और गन्दी वस्तुओं को एकत्र करके जला देते हैं। इस प्रकार रोग उत्पन्न करने वाले बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं और स्थानीय क्षेत्र साफ-सुथरा हो जाता है। इस त्योहार की अवधि में बाल-युवा सभी सड़कों-गलियों में नाचते हैं और राहगीरों से परिहास भी करते हैं। जब यह अवधि समाप्त होने को होती है, तब लकड़ियों को इकट्ठा करके होली जलाते हैं तथा अग्नि के आस-पास बाल-कृष्ण के शरारत-भरे आमोद-प्रमोदों का स्मरण कराने वाले खेल खेलते हैं। लोग होली की अग्नि को अपने-अपने घरों में ले जाते हैं। उनका विश्वास है कि अग्नि से उनके घर पवित्र तथा रोग-मुक्त हो जायेंगे।

आजकल होली के त्योहार के नाम पर लोग निन्दनीय कर्म करते हुए पाये जाते हैं। वे ताड़ी-जैसे नशीले पेय का पान करके सड़कों पर पड़े रहते हैं या मारे-मारे फिरते हुए अश्लील बातें करते हैं। वे शराब और जुए में पानी की तरह पैसा बहा देते हैं। इन दोषों को पूर्णत: दूर किया जाना चाहिए।

होली का और इसकी तरह के त्योहारों का आध्यात्मिक महत्त्व यह है कि यदि इन्हें सम्यक् ढंग से मनाया जाये, तो भगवान् में आस्था उत्पन्न होती है तथा मनोरंजन भी होता है। लोग हवन करते हैं और खेतों की उपज को उपभोग में लाने के पूर्व उन्हें देवताओं को अर्पित करते हैं। इन त्योहारों के अवसर पर भगवान् की मनोहारिणी लीलाओं का भी चिन्तन-स्मरण किया जाता है। इस प्रकार इन्द्रिय-सुखों की ओर से मन हट जाता है तथा वृत्तियाँ अध्यात्मोन्मुखी हो जाती हैं।

होली के त्योहार को मात्र दूसरों पर रंग डालने तथा अग्नि जला कर आनन्द मना लेने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। इस अवसर पर भगवान् की पूजा, संकीर्तन, प्रवचन, प्रार्थना की मन:स्थिति में पवित्र स्थानों का दर्शन, पवित्र नदियों में स्नान, महात्माओं के साथ सत्संग, दान आदि के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने चाहिए। केवल तभी होली का त्योहार उचित ढंग से मनाया जा सकता है।

समस्त महत्त्वपूर्ण हिन्दू त्योहारों के मूल में धार्मिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी तत्त्व निहित रहते हैं। होली का त्योहार इस तथ्य का अपवाद नहीं है। प्रत्येक ऋतु का एक त्योहार होता है। होली वसन्त ऋतु का त्योहार है। भारत कृषि-प्रधान देश है। इस देश के दो बड़े त्योहार उसी समय में मनाये जाते हैं, जब अनाज खेतों से कट कर खलिहानों मे आ जाता है तथा किसानों के कोठार (जहाँ अनाज का भण्डारण किया जाता है) अन्न से भर जाते हैं। किसान अपने कठिन परिश्रम का फल स्वयं देख कर प्रसन्नता से झूम उठते हैं और होली के आमोद-प्रमोद में खो जाते हैं। पूरे संसार में फसल-कटाई का मौसम उल्लासमय मौसम के रूप में मनाया जाता है।

कठिन परिश्रम करने के बाद मानव को परिवर्तन चाहिए तथा विश्रान्ति भी। चिन्ताओं से तथा परिश्रम से उत्पन्न तनाव से उसका मुक्त होना आवश्यक है। होली की तरह के त्योहारों से उसे मानसिक शान्ति तथा आह्लाद प्रदान करने वाला भोजन तथा टानिक मिल जाता है।

होली के त्योहार का धार्मिक तत्त्व भगवान् कृष्ण की पूजा है। कुछ स्थानों में इस त्योहार को डोलयात्रा भी कहते हैं। (डोल का अर्थ है झूलना।) वहाँ भगवान् कृष्ण के बाल-रूप की प्रतिमा को गुलाल-अबीर तथा फूलों से सजा कर पालने में रख कर झुलाया जाता है। वृन्दावन की गोपियों के साथ बालकृष्ण द्वारा किये गये आमोद-प्रमोद से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं तथा उनके (भगवान् कृष्ण के) पवित्र नाम का जप किया जाता है।

होली के त्योहार में निहित सामाजिक तत्त्व है एकत्व। छोटे-बड़े, धनवान्-निर्धन तथा बराबरी के स्तर के लोग एक-दूसरे को गले लगा कर एकत्व का परिचय देते हैं। यह त्योहार हमें **'बीती ताहि बिसार दे'** का उपदेश देता है। गत वर्ष की दुर्भावनाओं को भूलें तथा प्रेम, सहानुभूति, सहयोग तथा सबके प्रति समानता के भावों के साथ नये वर्ष का शुभारम्भ करें। यही एकत्व आत्मा के भी साथ अनुभव करें।

होली का अर्थ त्याग भी है। भक्ति-ज्ञान की अग्नि में मन की समस्त अशुद्धताओंह्नह्नअहंमन्यता, दम्भ, कामुकता आदिह्नह्नको जला डालें। योगाभ्यास की अग्नि से वैश्व प्रेम, करुणा, उदारता, नि:स्वार्थता का प्रकाश फैलने दें। यही होली का वास्तविक तात्पर्य है। बुद्धिहीनता तथा असंगतियों के दलदल से निकलें तथा दिव्यता के सागर की गहराई में प्रवेश करें।

होली का सन्देश हैह्नह्नसदा अपने हृदय में भगवत्प्रेम प्रदीप्त रहने दें। आन्तरिक आध्यात्मिक प्रदीप्ति ही वास्तविक होली है। भगवद्गीता के अनुसार ऋतुओं में वसन्त ऋतु भगवान् की विभूति (प्रकटीकरण) है। वसन्त ऋतु में मनायी जाने वाली होली उनका हृदय ही है।

(अनुवादक : स्वामी रामराज्यम्)

स्वयं पर दायित्व लें : आत्म-विश्लेषण करें!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

यदि आप स्वयं अपने सम्बन्ध में कुछ जानना चाहते हैं, अपने जीवन की बनावट, उसके आचरण और गुणवत्ता के विषय में जानना चाहते हैं, तो आपको स्वयं को जाँचना पड़ेगा, स्वयं का परीक्षण करना पड़ेगा; क्योंकि और अच्छे के लिए समस्त परिवर्तन, समस्त रूपान्तरण आत्म-परीक्षण से ही प्रारम्भ होते हैं। आत्म-विश्लेषण के बिना कोई उन्नति, कोई उपलब्धि सम्भव नहीं है। अपने 'बीस महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक उपदेशों' के अन्त में गुरुदेव ने हमें दैनिक आत्म-विश्लेषण करने तथा आत्म-संशोधन रजिस्टर रखने का निर्देश दिया। इसका अर्थ यही है कि स्वयं को जानें और संशोधित करें।

आपके अपने दुःखों, समस्याओं, मुसीबतों और कष्टों का तथा जो मुसीबतें और कष्ट आप अन्य दूसरे लोगों को पहुँचाते हैं, उन सबका प्रथम और मुख्य कारण आप स्वयं हैं। आपको इसका दायित्व लेना और अपने को भली-भाँति परखना सीखना होगाह्न''नहीं, कोई अन्य वस्तु अथवा व्यक्ति या परिस्थिति इसका कारण नहीं है। मैं इसके लिए उत्तरदायी हूँ। यह मेरे ही कारण हुआ है।''

इसे जानें। इसे समझ लें कि भगवान् श्रीकृष्ण की यह मर्मोक्ति कि 'व्यक्ति स्वयं अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु है', बिलकुल सही है। ''इसका कारण मुझे ही ढूँढ़ना होगा। मुझे ही स्वयं को ठीक करना होगा।'' तब सब-कुछ सही हो जायेगा।

इस पर मनन करें। यह कितना महत्त्वपूर्ण है, इसे जानने का प्रयत्न करें, बालवत् ही बने रह कर सदैव अपनी गलतियों का कोई अन्य कारण खोजने का ही प्रयत्न न करते रहें। इसे किसी दूसरे के सिर पर ही न मढ़ते रहें। कहेंह्न''नहीं, क्या गलत है, यह ढूँढ़ने मैं बाहर कहीं नहीं जाऊँगा। सर्वप्रथम और सर्वाधिक मुझे अपने ही भीतर देखना है। मैं ही दायित्व लेता हूँ और स्वयं में सुधार लाता हूँ। तब सब-कुछ सही हो जायेगा।''

अत: विकसित हों, प्रौढ़ हों, निर्भीक हों और स्वयं पर दायित्व लें। पहले अपने भीतर देखें, फिर अन्य बात करें। यदि आपका दृष्टिकोण ऐसा होगा, तब आपकी प्रगति में कोई बाधक नहीं हो सकता। तब आपके परिपूर्णता की ओर के ऊर्ध्वगामी पथ में कोई बाधा नहीं बन सकता। विषय का सार-तत्त्व यही है।

गीता का छठा अध्याय हमें बताता है कि अन्तत: साधना की सफलता केवल तभी सम्भव है, जब यह वैराग्य द्वारा पोषित हो। और, सफल वैराग्य केवल आत्म-परीक्षण तथा आत्म-निरीक्षण द्वारा ही सम्भव है, अन्यथा यह असम्भव है। जब तक भीतर की सतर्कता, अन्तर की जागरूकता, आन्तरिक सावधानी और गहन आत्म-विश्लेषण नहीं हैह्न

प्रतिदिन, प्रत्येक पग पर, प्रत्येक बात जो आप करते या सोचते हैं उसमें, और प्रत्येक प्रतिक्रिया और कार्य मेंह्वह्वतब तक वैराग्य सम्भव नहीं है।

अपनी भीतरी मानसिकता के स्तर पर सतर्कता द्वारा, सचेतना द्वारा, आत्म-जागरूकता द्वारा वैराग्य को पोषित करना होगा। केवल तभी आपके जीवन में वैराग्य आ सकता है और आपकी साधना सफल हो सकती है। आपके गुरु अथवा भगवान् या अन्य किसी भी सन्त द्वारा आपको वैराग्य दिया नहीं जा सकता। वह अपने उदाहरण द्वारा आपको प्रेरित कर सकते हैं; किन्तु आपको यह दे नहीं सकते। यह पूर्णतया एक ऐसी वस्तु है, जिसके लिए साधक को परिश्रम करना पड़ता है और पूर्ण सतर्कता से, पूर्ण सावधानी से, पूर्ण जागृति और पूर्ण जागरूकता से परिश्रम करते रहना पड़ता है।

सच्चे साधक के लिए कोई निद्रा नहीं है। इसलिए बुद्धिमान् बनें और आत्म-परिष्कार में लग जायें। आत्मानुभूति प्राप्त करें और धन्य हो जायें। भगवान् और गुरुदेव के आशीर्वाद की आपके ऊपर स्वयमेव वृष्टि होगी।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

प्रकाशित हो गयी है :

भगवान् शिव और उनकी आराधना

लेखक : श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज

इस पुस्तक में शिव-ताण्डव, शक्तियोग, शिवयोग आदि की सरल विवेचना प्रस्तुत की गयी है। शिव-आराधना के अन्तर्गत भस्म, अभिषेक, त्रिशूल, डमरू, अर्धचन्द्र, मृग, सर्प-माला, त्रिनेत्र, गंगा-प्रवाह आदि के महत्त्व तथा उनके निहितार्थों पर भी प्रकाश डाला गया है। भगवान् शिव तथा उनकी लीलाओं, शैव आचार्यों, शैव भक्तों, शैवों के त्यौहारों, शिव-स्तोत्रों आदि का वर्णन विशेष रूप से रोचक है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में वीर शैववाद, काश्मीर शैववाद तथा प्रमुख शैव उपनिषदों जैसे गम्भीर विषयों पर भी सरल चर्चा प्रस्तुत की गयी है। शिव-तत्त्व के साक्षात्कार हेतु एक अनुपम मार्गदर्शिका के रूप में शिव-भक्तों के लिए इस पुस्तक की उपादेयता असन्दिग्ध है।

पृष्ठ-संख्या : २३२ आकार : डिमाई मूल्य : रु० ९०/-

प्राप्ति-स्थान

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द पब्लीकेशन लीग

पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत

<u>*बालकों के लिए दिव्य जीवन :*</u>

जल्दबाजी से बरबादी होती है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक : सोहन, मोहन और विजयह्ह्हतुम सब-के-सब यहाँ हो। बहुत अच्छा। सोहन, तुम कब आये?

सोहन : जी, मैं आज सुबह आया।

शिक्षक : क्या चाहते हो? हमेशा की तरह आज शाम को भी कहानी वाला कार्यक्रम चलाया जाये ?

लड़के : जी हाँ।

शिक्षक : ठीक। इस बार मैं तुम लोगों से कोई दिलचस्प कहानी सुनना चाहता हूँ। तुममें से कौन-कौन कहानी सुना सकता है? हाथ उठाओ।

(सब अपना हाथ उठाते हैं।)

शिक्षक : बहुत अच्छा। इसका मतलब है कि तुम सब कहानी पढ़ने में रुचि रखते हो। तो बारी-बारी से सुनाना।

(विजय पहले हाथ उठा कर बताता है कि वह कहानी सुनाना चाहता है।)

बहुत ठीक। विजय! अब आगे आओ और हम लोगों को कोई बढ़िया कहानी सुनाओ।

विजय : एक जंगल में एक शिकारी एक अकेली झोपड़ी में रहता था। उसके पास एक वफादार शिकारी कुत्ता रहता था, जिसका नाम टाइगर था। एक दिन शिकारी की पत्नी बीमार हो गयी, इसलिए अपने बच्चे को उस कुत्ते के सुपुर्द कर वह शिकार खेलने चला गया। इस बीच एक भेड़िया उस झोपड़ी में घुस आया, जहाँ वह बच्चा सोया हुआ था। वह पालने पर झपट पड़ा और बच्चे को खाने की कोशिश की। कुत्ते ने एकदम भेड़िये पर हमला किया। दोनों के बीच खूब लड़ाई हुई। अन्त में भेड़िया मारा गया और कुत्ता अपने मालिक के बच्चे को बचाने में सफल हो गया। लेकिन इस लड़ाई में कुत्ते का मुँह खून से सन गया।

शिकारी घर लौटा। कुत्ते के मुँह पर खून देख कर उसने सोचा कि सम्भव है, इसने मेरे बच्चे को खा लिया। इस विचार से वह क्रोध से पागल हो गया और उसने कुत्ते को तत्काल ही गोली मार दी।

फिर झोपड़ी में जा कर देखा, तो बच्चा आराम से सोया हुआ था और पास में भेड़िया मरा पड़ा था। अब सारी बात उसकी समझ में आयी। तब वह उस कुत्ते के लिए बड़ा पश्चात्ताप करने लगा, जिसने अपनी जान पर खेल कर मालिक के बच्चे की रक्षा की। वह बहुत पछताया और रोने लगा, लेकिन उसका रोना-धोना कुत्ते को जीवित न कर सकता था।

सोहन : ऐसा कौन है जो टाइगर के समान वफादार कुत्ते तो पालना न चाहे? किन्तु ऐसे मालिक को धिक्कार है, जिसने कुत्ते की वफादारी पर सन्देह किया और उसे तत्काल ही मार डाला ! कितने खेद की बात है!

मोहन : हाँ मित्र! मैं तुमसे सहमत हूँ। मालिक वास्तव में बड़ा मूर्ख था। कुत्ते के मुँह पर खून लगा देख कर वह एकदम भड़क गया और अपनी विचार-शक्ति

खो बैठा। स्थिति समझने के लिए वह एक पल भी रुक न सका। अपनी आँखों से देख कर सारी स्थिति समझ लेने के लिए वह झोपड़ी के अन्दर तक न गया।

विजय : ऐसे क्रोधी, अविवेकी, उतावले, धैर्यहीन, आसुरी वृत्ति वाले लोगों की इस संसार में कमी नहीं है।

शिक्षक : बहुत खूब! शिकारी की जल्दबाजी के प्रति तुम लोगों की प्रतिक्रिया और हर-एक के तुम्हारे अपने-अपने दृष्टिकोणों को मैं शान्ति से सुनता रहा हूँ। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम लोगों में से किसी ने भी उस मालिक के पक्ष में नहीं कहा और उसके नृशंस काम की तथा कुत्ते के प्रति उसके अविश्वास की निन्दा की। इसलिए ध्यान रखो कि सन्देह या शंका सबसे बड़ा शत्रु है। उससे मन अशान्त हो जाता है। क्रोध और सन्देह से मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है।

क्या तुम जानते हो कि वह शिकारी इतना उतावला, अविवेकी और धैर्यहीन बन कर क्यों ऐसा नृशंस कार्य कर बैठा?

(कुछ समय तक शान्ति रही। कोई उत्तर नहीं दे सका।)

शिक्षक : इसका एक ही कारण था कि उस आदमी के मन में अपने बच्चे के प्रति आसक्ति थी। उसके मन में अपने इकलौते बच्चे के प्रति बहुत प्यार और मोह था और इसीलिए वह तत्काल उत्तेजित हो उठा, गुस्से से पागल हो गया और विचार-शक्ति खो बैठा। क्रोधावेश में वह ठीक बात का विचार नहीं कर सका।

बच्चो! नरक के तीन द्वार जानते हो?

लड़के जी नहीं। वे कौन-से हैं?

सोहन : (धीमी आवाज में) क्या राजमहल की भाँति नरक का भी कोई द्वार होता है।

(सब हँसते हैं।)

शिक्षक : तो बच्चो, ध्यान से सुनो! काम, क्रोध और लोभहहये तीन नरक के द्वार हैं। मनुष्य जब क्रोध करता है, तब उलझन में पड़ जाता है, वह स्मृति और समझ खो बैठता है। क्रोध में जो मन में आये, उसी को बकने लगता है और जैसा मन में आये, वैसा कर बैठता है। वह हत्या कर देता है। एक भी चुभता हुआ शब्द लड़ाई और खून का कारण बन जाता है। क्रोध में मनुष्य होश-हवास खो बैठता है। उसकी बुद्धि उसका साथ नहीं देती। उसे मालूम नहीं हो पाता कि वास्तव में वह कर क्या रहा है। वह पूरी तरह से क्रोध के प्रभाव में रहता है। क्रोध आत्मज्ञान को नष्ट कर डालता है। यह शान्ति का सबसे बड़ा शत्रु है। सभी दुर्गुण, दोष और कुकर्म क्रोध से ही पैदा होते हैं। जिसने क्रोध को जीत लिया है, वह कभी भी कोई गलत या बुरा कार्य नहीं कर सकता। अप्रसन्नता, रोष, उत्तेजना तथा चिड़-चिड़ाहटहहये सब क्रोध के ही अलग-अलग रूप हैं, जिनमें मात्रा और तीव्रता के अनुसार भेद होता है।

सोहन : मास्टर साहब, आपने क्रोध के बारे में काफी विस्तार से समझाया है, लेकिन क्या इस महादोष से बचने का कोई उपाय नहीं है ?

शिक्षक : तुमने बहुत सही प्रश्न पूछा। तुम समझदार दीखते हो। मैं बताता हूँ। क्रोध को काबू में करने के लिए मौन और विचार (ठीक-ठीक चिन्तन करना)हहये दो उपाय बहुत सहायक होते हैं। मनुष्य छोटी-छोटी बातों के लिए एकदम क्रोध में आपे से बाहर हो जाता है। जब क्रोध को रोकना कठिन लगे,

तो तुरन्त ही उस स्थान से बाहर चले जाना चाहिए और तेजी से टहलना चाहिए। फौरन ठण्ढा जल पीना चाहिए।

क्रोध अथवा चिड़चिड़ाहट मन की दुर्बलता का लक्षण है।

अँधेरी कोठरी में बत्ती या टार्च जला दो, तो फौरन अँधेरा मिट जाता है। इसी प्रकार क्रोध को उसके विपरीत गुणोंह्रह्रजैसे धैर्य, विचार (सही चिन्तन), प्रेम, क्षमा और सेवा-भाव के अभ्यास से जीता जा सकता है। तब क्रोध अपने-आप शान्त हो जाता है। घृणा का शमन घृणा से नहीं, उसके विपरीत गुण 'प्रेम' से होता है।

वह शिकारी धैर्य और विचार का थोड़ा भी अभ्यास कर पाया होता, तो उसे अपने स्वामी-भक्त कुत्ते से हाथ न धोना पड़ता। जल्दी में तुम्हें कुछ भी नहीं करना चाहिए। जल्दबाजी बरबादी लाती है। कोई काम करने से पहले उसके बारे में दो बार सोचो। अब समझे मोहन! क्या सारी बातें समझ में आ गयीं?

मोहन : जी हाँ, समझ गया। शिकारी और कुत्ते की कहानी सुन कर मुझे भी ऐसी ही एक कहानी की याद आयी जो मेरे साथ घटी थी। क्या मैं उसे संक्षेप में बतला सकता हूँ?

शिक्षक : अवश्य! तुम्हारे अनुभव सुन कर सभी लड़के खुश होंगे और कुछ सबक भी सीखेंगे।

मोहन : एक बार ऐसा हुआ कि मैंने वंशी बजाते हुए श्रीकृष्ण का एक सुन्दर चित्र खरीदा और अपनी मेज पर उसे सजा दिया। एक दिन सुबह देखा, तो वह वहाँ नहीं था। मुझे मालूम न था कि उसे किसने उठा लिया। मैंने बहुत खोजा, किन्तु कोई लाभ न हुआ। जितनी देर मैं चित्र खोजता रहा, उतनी देर तक मेरी छोटी बहन कमरे में एक कोने में खड़ी-खड़ी मुस्करा रही थी। मैंने सोचा कि चित्र उसी ने उठा लिया होगा और कहीं छिपा दिया होगा। तब गुस्से के आवेश में मैं उसे वहीं और उसी समय खूब पीटने लगा। वह जोर-जोर से रोने लगी। माँ दौड़ी आयी और उसे बचा लिया। माँ जानती थी कि वह निर्दोष है, इसलिए उसे मारने के कारण मुझे खूब डाँटने लगी। दोपहर में मेरे पिता जी आफिस से घर लौटे, तब सारी बात समझ में आयी। असल में बात यह थी कि उस कमरे की सफाई होनी थी। पिता जी ने यह सोच कर कि फोटो पर गर्द जम जायेगी, चित्र को वहाँ से हटा कर अपने बक्से में बन्द कर दिया था।

तब मुझे मालूम हुआ कि मैंने अपनी निरपराध बहन के साथ नाहक बुरा व्यवहार किया। यदि कुछ धैर्य और विचार से काम लिया होता, तो मैं इतनी निर्दयता से पेश न आता।

शिक्षक : बहुत खूब। अच्छा, बच्चो! अब देर हो रही है। आज शाम का समय बहुत अच्छी तरह व्यतीत हुआ। तुम लोगों ने हमें अपने-अपने अनुभव और कहानियाँ सुनायीं। मुझे आशा है कि आज की बातों से तुम लोगों को खूब लाभ मिला होगा। अत: प्यारे बच्चो, तुम लोग धैर्य, विचार (सही चिन्तन), हिम्मत, विश्व-प्रेम, नि:स्वार्थ सेवा, दृढ़ इच्छा-शक्ति आदि रचनात्मक सद्‌गुणों का विकास करो।

ईश्वर तुम लोगों का कल्याण करे!

लड़के : प्रणाम मास्टर साहब। आपके उपदेश के अनुसार ही हम व्यवहार करेंगे। हमारे विचारों में बहुत परिवर्तन हो गया है। यह सब आपकी कृपा का फल है। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

प्रणव ओंकार : ५

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

'ॐ' अविनाशी है। विश्व में सब नाम नश्वर हैं, क्योंकि वे रूप के अनुरूप हैं, रूप के साथ उनकी सादृश्यता है। किन्तु यह वैश्विक रूप अविनाशी है और नाम भी अविनाशी है जिसमें संसार का प्रत्येक नाम और रूप समाविष्ट है।

'ओमित्येतदक्षरम्'ह्लह्ल'ॐ' एक अक्षर है जिसका कभी क्षरण (विनाश) नहीं होता। **'तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद् भविष्यदिति सर्वमोंकार एव। यच्चान्यत्रिकालातीतं तदप्योंकार एव...।'** भूतकाल में जो-कुछ भी था, वर्तमान में जो है और भविष्य में जो होगाह्लह्लये सब 'ॐ' ही है; क्योंकि 'ॐ' का कोई भूत, भविष्य और वर्तमान नहीं है। विश्वात्मा का कोई काल नहीं होता।

माण्डूक्योपनिषद् में 'ॐ' का कितना भव्य वर्णन किया गया है! काल के अन्तर्गत जो-कुछ भी हैह्लह्लभूत, भविष्य और वर्तमानह्लह्लसब 'ॐ' है। इतना ही नहींह्लह्लकालातीत भी जो-कुछ है, वह 'ॐ' है। 'ॐ' की द्विविध प्रकृति हैह्लह्ललौकिक और पारलौकिक। यह शब्द है और शब्दातीत भी है। यह अ, उ, म् से युक्त समस्त सृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु इसकी एक चतुर्थ प्रकृति भी है जो इन अ, उ, म् के भेदों का भी अतिक्रमण करती है। इसे अमात्रा अथवा चतुर्थ भाव कहा जाता है।

'ॐ' का शब्दातीत रूप अमात्रा है जो अपरिमित है और कर्णों से श्रव्य नहीं है, इसका श्रवण नहीं किया जा सकता। यह अमात्रा अथवा अपरिमित 'ॐ' की शाश्वत प्रकृति न तो कोई ध्वनि है और न ही स्पन्दन। यह केवल एक अस्तित्व है, पावन और सहज, जिसे सच्चिदानन्द-स्वरूप (सत्-चित्-आनन्द-स्वरूप) कहते हैं।

भूत, वर्तमान और भविष्य काल में जो-कुछ भी है, वह 'ॐ' के पूर्ण विस्तार का लौकिक स्वरूप है और जो कालातीत है, वह 'ॐ' का शाश्वत स्वरूप है। नदी और सागर की अनुरूपता को देखें, तो नदी लौकिक स्वरूप है और सागर शाश्वत स्वरूप है। नदी का नाम भी है और रूप भी है; किन्तु सागर में नदी का नाम और रूप नहीं रह जाता, क्योंकि सब नदियाँ सागर में विलीन हो कर एक हो जाती हैं।

लौकिक रूप में 'ॐ' सृष्टि के समस्त अस्तित्व का अभिधान हो सकता है; किन्तु शाश्वत रूप में इसका कोई भी रूप नहीं हो सकता, प्रत्युत यह निराकार है, अक्षय है और देश-काल से अतीत है। और इसीलिए 'ॐ' एक नाम भी है और रूप भी है, साकार भी है और निराकार भी है। यह एक स्पन्दन है, चेतना है, सृष्टि है और सच्चिदानन्द हैह्लह्लयह सब 'ॐ' है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

बाल-स्तम्भ

मैं मानव हूँ न?

स्वामी रामराज्यम्

मूँगफली के भाव निकट भविष्य में बढ़ने की पूरी-पूरी आशा थी। व्यापारी लोग मूँगफली से अपने गोदाम भरने लगे।

एक व्यापारी ने कई व्यापारियों से धन उधार ले कर मूँगफली खरीद ली। ऋण ले कर यह व्यापार करने की बात उसके छोटे भाई को पसन्द तो नहीं आयी, लेकिन बड़े भाई की बात रखने के लिए वह चुप ही रहा। कुछ दिनों बाद बड़े भाई की मृत्यु हो गयी। मुसीबत अकेले नहीं आती, अपने साथ अन्य मुसीबतों को भी ले कर आती है। मूँगफली के गोदाम में आग लग गयी। सारी मूँगफली जल कर राख हो गयी। छोटे भाई के दीवालिया होने की नौबत आ गयी। उधार देने वाले व्यापारी उससे अपना धन वापस माँगने लगे। अब छोटा भाई क्या करे! वह कर्ज चुकाना चाहता था, लेकिन कैसे चुकाये?

एक सेठ जी थे। उनसे भी बड़े भाई ने मूँगफली खरीदने के लिए एक बड़ी रकम उधार ले रखी थी। वह छोटे भाई के पास आये। छोटा भाई रोते हुए कहने लगाह्ह‘‘सेठ जी, मैं सारा कर्जा चुका दूँगा, लेकिन अभी मैं मजबूर हूँ।’’

सेठ जी बोलेह्ह‘‘तुम वह कागज तो लाओ, जिस पर मेरे द्वारा दी गयी रकम दर्ज है।’’

छोटा भाई वह कागज ले आया।

सेठ जी ने उस कागज को ध्यान से पढ़ा, फिर वह छोटे भाई से बोलेह्ह‘‘मैंने रकम तुम्हारे भाई को उधार दी थी। है न?’’

थोड़ी देर रुक कर वह फिर बोलेह्ह‘‘रकम वापस करने का इकरार तुम्हारे भाई ने किया था। वह जीवित होते, तो अपनी रकम मैं उनसे वापस ले लेता। भाई के जाने के साथ-साथ यह इकरार भी खत्म हो गया।’’ यह कह कर उन्होंने वह कागज फाड़ डाला।

सेठ जी चलने के लिए उठ खड़े हुए। छोटा भाई आश्चर्य से आँखें फाड़े उन्हें देखता रह गया।

बच्चो, धन ही सब-कुछ नहीं होता। उससे भी अधिक मूल्यवान् होती है मानवता। मानवता का एक लक्षण हैह्हअपने अधिकारों को भूलना और अपने कर्तव्यों को याद रखना। सेठ जी को अपना धन वापस पाने का अधिकार था। इस अधिकार को वह भूल गये। छोटे भाई की मजबूरी पर ध्यान देना उनका कर्तव्य था। इस कर्तव्य का उन्होंने पालन किया मानव-शरीर मिल जाने से ही कोई मानव नहीं बन जाता। जिसमें मानवता होती है, केवल वही मानव होता है।

बच्चो, तुम अपने से बार-बार पूछनाह्ह‘‘मैं मानव हूँ न?’’ □

गतांक से आगे :

वैराग्य की महिमा

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

वैरागी पुरुष का मन पूर्णतया भिन्न प्रकार का होता है। उसके अनुभव पूर्णत: भिन्न होते हैं। वह संसार के अस्थायी, नश्वर विषयों से स्वयं को अलग करने की कला में प्रवीण होता है। उसे इनमें किंचित् भी आकर्षण नहीं होता। वह निरन्तर अनन्त अथवा परमात्मा में लीन रहता है। वह जीवन के प्रत्येक क्षण के साथ उस साक्षी चेतना की तरह स्वयं को जानता है जो सुख, दु:ख, दर्द, निन्दा, प्रशंसा, सम्मान, अपमान तथा जीवन की प्रत्येक स्थितियों में उपस्थित है। वह भयंकर तूफान में अटल रहने वाले शिखर की भाँति इस अद्‌भुत संसार के खेल में द्रष्टा की भाँति खड़ा रहता है। वह सुखकर और दु:खकर अनुभवों से रंचमात्र भी प्रभावित नहीं होता; बल्कि वह उनसे कुछ अमूल्य शिक्षाएँ ग्रहण करता है। अन्य शब्दों में कहा जाये, तो उसे सुखदायक विषयों के प्रति कोई आकर्षण नहीं होता और न ही उसे दु:खदायक विषयों के प्रति किसी प्रकार का विकर्षण होता है। वह दु:ख से भयभीत नहीं होता। उसे यह भली-भाँति ज्ञात है कि कष्ट उसकी आध्यात्मिक प्रगति और विकास में तथा लक्ष्य की लम्बी यात्रा में बड़े सहायक हैं। वह इस बात से सहमत है कि कष्ट संसार में श्रेष्ठ गुरु हैं।

मैं यहाँ एक चेतावनी दे रहा हूँ। प्रिय जिज्ञासु! यदि आप असावधान हैं और सभी प्रकार के लोगों से उन्मुक्तता से मिलते हैं, तो वैराग्य आ कर चला भी जाता है। इसलिए आपको वैराग्य का अत्यधिक उच्च स्तर तक विकास करना होगा। मन छोड़ी गयी वस्तुओं को पुन: प्राप्त करने हेतु स्वर्णिम अवसर की प्रतीक्षा करता रहता है। जब भी और जहाँ भी मन फुफकारे अथवा अपना फन उठाये (मन वस्तुत: सर्प की भाँति है) आप विवेक और ज्ञानियों रूपी अभेद्य किले तथा वैरागी महात्माओं का आश्रय लें। वैराग्य के भी भिन्न-भिन्न स्तर हैं। जब व्यक्ति स्वयं को ब्रह्म में स्थापित कर लेता है, तब परा वैराग्य आता है। अब वैराग्य पूर्णरूपेण स्वाभाविक होता है।

व्यक्ति संसार में निवास करते हुए भी सुख और दु:ख से मानसिक रूप से वैराग्य का विकास कर सकता है। उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसे संसार के सुखदायक अनुभवों द्वारा खींच न ले जाया जाये। इस प्रकार यदि वह कुछ वर्षों तक साधना कर लेगा, तो प्रत्येक अनुभव आध्यात्मिक सीढ़ी पर चढ़ने हेतु एक धनात्मक चरण होगा। अन्त में उसे आशाजनक सफलता मिलेगी और उसका मन अविचल होगा। उसका मन सम होगा। वैरागी मनुष्य तीनों लोकों में सर्वाधिक सुखी और धनी होता है। वह सर्वाधिक शक्तिशाली भी होता है। फिर उसे माया कैसे प्रलोभित कर सकती है!

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' की सेवाएँ

दिव्य जीवन संघ द्वारा 'शिवानन्द होम' की स्थापना ऐसे जरूरतमन्द तथा निर्धन व्यक्तियों की सेवा करने के लिए की गयी है, जिन्हें औषधीय उपचार की आवश्यकता है परन्तु जो साधन-हीन, निराश्रित, मानवीय सहायता से वंचित तथा समाज द्वारा उपेक्षित हैं और जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है।

यद्यपि कुष्ठ रोग ('हैनसन डिज़ीज़') पूर्णत: उपचार-योग्य है, परन्तु यह उतना साधारण रोग नहीं है, जितना प्रतीत होता है। पूरी अवधि तक औषधीय उपचार किये जाने के बावजूद अनेक कुष्ठियों को आजीवन ऐसी अंग-विकृतियों तथा शारीरिक असुविधाओं के साथ जीना पड़ता है, जो अपरावर्ती (irreversible) होती हैं अर्थात् न वे प्रभावित अंग पुन: सामान्य ढंग से कार्य कर सकते हैं और न उन शारीरिक असुविधाओं में परिवर्तित शारीरिक अनुकूलताएँ शरीर में वापस आ सकती हैं। विशेष रूप से ऐसा तब होता है, जब रोग का उपचार बहुत विलम्ब से शुरू किया जाता है। विलम्बित उपचार का एक कारण यह है कि रोगी के अंगों में कोई संवेदन नहीं होता तथा अल्सर होने पर कोई दर्द नहीं होता (इसीलिए उपचार कराने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं की जाती)। 'होम' में भरती किये जाने वाले अनेक कुष्ठियों के हाथ-पैरों की उँगलियाँ, आँखों और पैरों की तन्त्रिकाओं (nerves) की अपरावर्ती क्षति हो गयी होती है। ऐसी क्षति का परिणाम होता हैह्नह्नपूर्ण अन्धापन, उँगलियों का न रहना, 'ड्राप-फुट' तथा हाथ-पैरों के जीर्ण अल्सर। उदाहरणार्थ कुष्ठ रोगी गरम चाय से भरे गिलास की गरमी महसूस नहीं करता, अत: एक क्षण की भी असावधानी के फलस्वरूप उसके अंग गम्भीर रूप से जल सकते हैं, क्योंकि जलने के बाद होने वाली पीड़ा से ही प्रभावित अंग को (जलने से बचाने हेतु) हटा लेने की प्रतिवर्त क्रिया (reflex action) होती हैह्नह्नलेकिन उस समय जब कि शरीर को पर्याप्त हानि पहुँच चुकी होती है।

'होम' में भरती किये गये कुष्ठियों की देखभाल के अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा, व्यायाम, घाव न होने देने के लिए जल-चिकित्सा, नेत्र-चिकित्सा तथा घावों की सफाई और मरहम-पट्टी के साथ-साथ नियमित एम.डी.टी. उपचार पर बल दिया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर शल्य-चिकित्सा करायी जाती है। औषधियाँ दे कर, स्वास्थ्य-शिक्षा पर आधारित निर्देश दे कर तथा मासिक जाँच के द्वारा बाह्य (ओ.पी.डी.) कुष्ठ रोगियों का भी इलाज किया जाता है।

शारीरिक दशा कुष्ठ रोग का मात्र एक पक्ष है। सदियों से कुष्ठ रोगियों का अपमान तथा परित्याग किया जाता रहा है। उन्हें समाज की सामान्य धारा से अलग रह

कर जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया जाता रहा है। इस कुरूप तथा अगोपित रोग से ग्रस्त रोगियों को (समाज द्वारा लगाया गया) तिरस्कार का यह टीका उनके मानस में एक भारी और अकल्पनीय बोझ, एक गहरी उदासी तथा वेदना बन कर प्रवेश कर गया है। उनकी उदासी और मानसिक वेदना बाह्यत: हीन भावना, अवसाद, क्रोध, लोभ, अप्रत्याशित व्यवहार, सन्देह तथा संवेदना के अभाव में रूपान्तरित हो सकती है, परन्तु अन्तरतम में उनके विदीर्ण हृदय की पीड़ा ही छायी रहती है।

'होम' प्रतिदिन इसी प्रकार के रोगियों की देखभाल करता हैह्नह्न'होम'-परिसर में तथा परिसर के बाहर भी। यह उसके विनम्र सेवा-कार्यों का एक नियमित अंग है।

''जो दु:ख-शोक से आक्रान्त हैं वे मेरे पास आयें, मैं उन्हें सान्त्वना दूँगा। जो कोई भी मेरे पास आयेगा, उसको निष्कासित नहीं किया जायेगा। संसार के लोगों ने तुम्हें अस्वीकार कर दिया, परन्तु मैं ऐसा कदापि नहीं करूँगा।''

(प्रभु यीशु)

''जो भूखे हैं, उन्हें भोजन दें; जो वस्त्र-हीन हैं, उन्हें वस्त्र दें; जो रोगी हैं, उनकी परिचर्या करें। यह दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने वर्ष २००६ के दिसम्बर माह में सांस्कृतिक यात्रा की। स्वामी जी खण्डगिरि, भुवनेश्वर (उड़ीसा) स्थित स्वामी शिवानन्द सेंटेनरी ब्वायज़ स्कूल गये तथा विद्यालय की मैनेजिंग कमेटी की सभा में उपस्थित हुए। स्वामी जी ने विद्यालय के विभिन्न कार्यकलापों का निरीक्षण किया तथा वहाँ के अधिकारियों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों से भी विचार-विमर्श किया। स्वामी जी ने पुरी में एक भक्त के निवास-स्थान पर आयोजित सत्संग-कार्यक्रम में भी भाग लिया।

दिव्य जीवन संघ की ब्रह्मपुर शाखा अपनी स्वर्ण-जयन्ती मना रही थी। इस अवसर पर शाखा ने अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ सम्मेलन का भी आयोजन किया था। स्वामी जी ने २९ दिसम्बर २००६ से १ जनवरी २००७ तक इस सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में स्वामी जी ने प्रवचन दिये। १ जनवरी २००७ को आयोजित युवा सम्मेलन को भी उन्होंने सम्बोधित किया। वह ब्रह्मपुर शाखा भी गये।

उड़ीसा के जाजपुर जनपद के अन्तर्गत दिव्य जीवन संघ की बड़कुआँल शाखा ने शाखा-भवन का निर्माण-कार्य समाप्त किया था। इस भवन (जिसका नाम 'स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन' रखा गया है) का उद्घाटन ४ जनवरी को स्वामी जी महाराज ने किया। उन्होंने इस अवसर के उपलक्ष्य में आयोजित एक सत्संग-सभा में भी भाग लिया। ५ जनवरी को उन्होंने शाखा के सत्संग-कार्यक्रम में भाग लिया। बिंझरपुर के स्थानीय निवासियों द्वारा आयोजित पंचम वार्षिक धर्म महासभा की मीटिंग में भी स्वामी जी ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी जी ने

धार्मिक सद्भाव तथा दिव्य जीवन से सम्बद्ध गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों पर प्रवचन दिया। ६ जनवरी को स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ की भुवनेश्वर शाखा के शैल विहार उपकेन्द्र के भक्तों द्वारा आजोजित जन-सभा को सम्बोधित किया। ७ जनवरी को उन्होंने भुवनेश्वर शाखा के सत्संग-कार्यक्रम में प्रवचन दिया।

७ जनवरी को दिव्य जीवन संघ की कटक शाखा के निमन्त्रण पर स्वामी जी उस शाखा में पधारे तथा उन्होंने शाखा के नव-स्थापित पुस्तकालय का उद्घाटन किया। उसी दिन उन्होंने मासिक साधना दिवस के लिए उपस्थित भक्तों को सम्बोधित किया।

स्वामी शिवानन्द सेंटेनरी ब्वायज़ हाई स्कूल (खण्डगिरि, भुवनेश्वर) की मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते स्वामी जी ने ९ जनवरी को विद्यालय के वार्षिक दिवस-उत्सव में भाग लिया। तत्पश्चात् स्वामी जी दिव्य जीवन संघ मुख्यालय वापस लौटे।

आदरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज का सांस्कृतिक भ्रमण

दिव्य जीवन संघ, तमिल नाडु शाखा ने वर्ष २००६, माह दिसम्बर के दिनांक २९, ३० और ३१ को परम पूज्य गुरुदेव के जन्म-स्थान पावन पत्तमडै में राज्य स्तर की परिषद् आयोजित की। आदरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने मुख्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए उसमें निज उपस्थिति दी। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का जीवन तथा उपदेश एवं वर्तमान समय में उसकी सुसम्बद्धता-प्रासंगिकता पर प्रवचन दिया। समस्त तमिल नाडु तथा भारत के अन्य राज्यों के १००० से अधिक प्रतिनिधि उस परिषद् में उपस्थित थे। विभिन्न आश्रमों के सन्त गणों और विख्यात विद्वानों ने कार्यक्रमों में भाग ले कर, आध्यात्मिक जीवन और 'गुरुदेव का मिशन-सेवाकार्य और उपदेश' विषयक श्रोता गण को ज्ञात करके प्रबुद्ध किया।

इस अवसर को चिह्नित-उल्लेखनीय करने हेतु एक सुवेनीर (स्मारिका) प्रकाशित हुआ।

३३ वीं, समस्त आन्ध्र प्रदेश दिव्य जीवन संघ परिषद्, वर्ष २००७, माह जनवरी के दिनांक ३ से दिनांक ५ पर्यन्त विशाखपट्टनम् के समीप मन्दिर युक्त एक नगर, सिंहाचलम् में आयोजित की गयी। समस्त आन्ध्र, विशेषत: आन्ध्र के ग्राम्य विस्तारों में से ३००० प्रतिनिधियों ने इस तीन दिवसीय परिषद् में स्व-उपस्थिति दी। पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने, प्रमुख अतिथियों के रूप में, तीन दिन, उभय सत्रों में 'दिव्य जीवन के सिद्धान्त तथा आध्यात्मिक जीवन' विषय पर व्याख्यान दिये। विविध आध्यात्मिक संस्थाओं के साधु-महात्माओं ने भी परिषद् में भाग ले कर प्रतिनिधियों को आशीर्वादित किये। श्री चेल्ला राम कृष्ण जी, श्री श्रीनु सिद्धान्ती जी, श्री चन्द्रमौलि जी तथा आयोजन समिति के अन्य सदस्यों ने, श्री रामयोगी जी के मार्गदर्शन में उक्त परिषद् आयोजित की। उसके अनुसरण में, मुख्यालय की पारम्परिक प्रणाली के अनुसार साधना-सप्ताह सम्पन्न हुआ। यह परिषद् आन्ध्र प्रदेश के दिव्य जीवन संघ की गतिविधियों का संवर्धन करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

आई.आई.टी. कानपुर की 'विवेकानन्द समिति' ने दिनांक १२ जनवरी के स्वामी विवेकानन्द जी के जन्मदिन के पूर्व ही, दिनांक ९ से दिनांक ११ जनवरी २००७ की अवधि में आयोजित कार्यक्रम में शोभावृद्धि और आशीर्वाद के हेतु पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को आमन्त्रित किया। 'विवेकानन्द समिति' तथा आई.आई.टी. कानपुर स्थित दिव्य जीवन संघ की शाखा के सदस्यों ने स्वामी जी महाराज का उष्मापूर्ण स्वागत किया। आई.आई.टी. के प्रवचन-हाल में पूज्य स्वामी जी महाराज ने 'तनाव -व्यवस्था' और 'विद्यार्थी-जीवन में आध्यात्मिकता' पर प्रथम दो दिन व्याख्यान दिये तथा तृतीय दिन 'मार्गदर्शित ध्यान' का परिचालन किया। सब प्रवचनों और ध्यान-सत्र में आई.आई.टी. कानपुर के विद्यार्थी, प्रभागीय और प्राध्यापक गण ने प्रशंसनीय उपस्थिति दी। पूज्य स्वामी जी महाराज ने स्व-प्रवचनों में 'व्यक्ति के जीवन में तनाव कम करने की तथा आध्यात्मिक पथ पर चल कर जीवन को आकारित करने की विविध पद्धतियाँ' पर मार्गदर्शन दिया।

उन प्रवचनों के अनुसरण में तृतीय दिन को तनाव-मुक्ति की तकनीक-प्रविधियाँ एवं ध्यान के व्यावहारिक-प्रायोगिक सत्र आयोजित किये गये। पूज्य स्वामी जी महाराज, प्राध्यापक आर. के. सुलेरी जी के निवास स्थान पर छात्रों तथा अन्य जनों को मिलने हेतु व्यक्तिगत रूप से सुप्राप्य हुए। अनेक छात्र और अन्य जन, पूज्य स्वामी जी महाराज के व्यक्तिगत मार्गदर्शन-सलाह से अति लाभान्वित हुए। पूज्य स्वामी जी महाराज ने दिनांक ९ जनवरी के पूर्वाह्न में यशोदानगर स्थित दिव्य जीवन संघ, कानपुर की शाखा की भेंट की और शाखा-सदस्यों के साथ सत्संग परिचालित किया।

निमन्त्रणानुसार पूज्य स्वामी जी महाराज ने टस्कर टाउन में स्थित दिव्य जीवन संघ की शाखा की मुलाकात ली। शाखा ने दिनांक २४ जनवरी २००७ की सन्ध्या को बेंगलूरु की इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ वर्ल्ड कल्चर में पूज्य स्वामी जी महाराज का 'परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का जीवन-दर्शन' विषयक एक प्रवचन आयोजित किया। पूज्य स्वामी जी महाराज ने श्रीमद्भागवत तथा रामायण के सन्दर्भों के दृष्टान्त दे कर, 'बीस आध्यात्मिक नियम तथा साधना-तत्त्व' पर सुन्दर प्रतिभावप्राप्त प्रवचन दिया। शाखा ने दिनांक २५ जनवरी २००७ को शाखा-इमारत में पाद-पूजा, भजन-कीर्तन युक्त सत्संग किया और पूज्य स्वामी जी महाराज 'आध्यात्मिक जीवन' विषयक प्रवचन दिया। इस कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव के मिशन में ४० वर्षों से भी अधिक सेवा का योगदान देने वाले, वरिष्ठ भक्तों में से एक, आदरणीय श्री बालसुब्रह्मण्यम् जी का सम्मान भी किया गया। नंदी हिल्स की तलहटी में स्थित भोगनंदी ग्राम में शाखा ने दिनांक २६ जनवरी २००७ को एक शिविर आयोजित किया। शिविर-प्रतिभागियों ने श्री भोगनन्देश्वर तथा श्री हनुमान् मन्दिरों में प्रार्थना-पूजा सम्पन्न की और भजन-कीर्तन प्रस्तुत किये। पूज्य स्वामी जी महाराज ने मध्य में प्रवचन भी दिये। प्रश्न-उत्तर सत्र भी सम्पन्न हुआ। सब प्रतिभागियों के लिए यह शिविर अति लाभदायक रहा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

पत्तमडै में दिव्य जीवन संघ की परिषद् : दिसम्बर २९, ३० और ३१ को पवित्र पत्तमडै में तमिल नाडु राज्य की दिव्य जीवन संघ की परिषद् आयोजित हुई। समस्त भारत में से ६०० से अधिक प्रतिनिधियों के आगमन के कारण वह समस्त भारत दिव्य जीवन संघ की परिषद् जैसी प्रतीत होती थी। आदरणीय श्री स्वामी षण्मुखानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी शरवणभवानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी सुन्दरानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी गुरुप्रकाशानन्द जी, विवेकानन्द आश्रम के आदरणीय श्री स्वामी अखिलानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी रामकृष्णानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी शंकरानन्द जी, अन्य धर्मों के आध्यात्मिक सन्त-उपदेशक तथा अन्य अनेक विद्वानों ने परिषद् को सम्बोधित किया। मदुरै से नादस्वरम् मण्डली, मदुरै से दो भजन-मण्डलियाँ, चेन्नै से एक भजन-मण्डली, शंकरनगर के स्कूल-छात्रों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आदरणीय श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी ने अपने जादू के खेल द्वारा सबको पुलकित किया। विशाल नगर-कीर्तन, तीनों दिनों को दिन में द्विवार, शोभा-यात्रा के रूप में सम्पन्न हुआ। एक स्मारिका का प्रकाशन हुआ और इसे समस्त प्रतिनिधियों को वितरित किया गया।

विशेष गतिविधियाँ

(१) गीता-जयन्ती

समस्त मानव-जाति के हेतु 'श्रीमद् भगवद् गीता' चिरकाल से सदोदित, ऐहिक-सांसारिक तथा आध्यात्मिक जीवन में प्रेरणा-स्रोत और मार्गदर्शक है। इसका नाम 'दिव्य गान' (The Divine Song) इसके सुमधुर और लयबद्ध गायन का सूचक है। वर्ष २००६, दिनांक १ दिसम्बर को मनायी गयी 'गीता-जयन्ती' में हमारी अनेक शाखाओं ने श्रीमद् भगवद् गीता का सामूहिक पाठ, स्पर्धा, होम-हवन तथा अन्य भी आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किये। शाखाओं द्वारा गीता-जयन्ती को आयोजित कार्यक्रमों के अहवाल निम्नानुसार हैं :

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): शाखा ने अनेक अन्य ग्रामों के भक्तों सहित ५०० भक्तों की प्रतिभागिता-उपस्थिति में ब्राह्ममुहूर्त से आरम्भित हो कर रात्रि के ११.०० के समय पर्यन्त विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया। प्रभातफेरी, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, जप, लिखित मन्त्र-जप, पादुका-पूजन, गीता-पारायण, होम, भगवद्गीता विषयक प्रवचन, पूजा, अर्चना, भजन-कीर्तन, प्रसाद-सेवन इत्यादि इन कार्यक्रमों में समाविष्ट थे।

बरबिल् (उड़ीसा): गीता-यज्ञ।

बेलगुंठा (उड़ीसा): तीन दिवसीय प्रवचन तथा समापन के दिन ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, पादुका-पूजन, श्रीमद्भागवत-पाठ, स्वाध्याय, महामन्त्र कीर्तन, गीता-पारायण, होम आदि।

भंजनगर (उड़ीसा): पादुका-पूजा, प्रभात में भगवान् श्रीकृष्ण की षोडशोपचार विशेष पूजा तथा सायंकाल में गीता-पाठ और होम।

बीकानेर (राजस्थान): गीता-पारायण, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का कीर्तन और भजन।

छत्रपुर (उड़ीसा): तीन दिवसीय गीताभ्यास, छात्रों (४६ प्रतिभागी) और सामान्य जनों के लिए गीता-पाठ-स्पर्धा।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): पूजा, होम तथा प्रभातकालीन सत्र में गीता-स्वाध्याय और सायंकालीन सत्र में गीताभ्यास तथा आरती।

काशिबुग्ग (आन्ध्र प्रदेश): पादुका-पूजन, श्री विष्णु सहस्रनाम तथा गीता के पाठ, २०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन।

खाटिगुडा (उड़ीसा): सायंकाल में तीन दिवसीय गीता-वर्ग और प्रभात में उपनिषद्-वर्ग।

लैईडम् (आन्ध्र प्रदेश): १०० से अधिक प्रतिभागियों सहित पारायण तथा यज्ञ।

नाभा (पंजाब): एक पुस्तिका का प्रकाशन, छात्रों को बाल-गीता का वितरण।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): पारायण किया गया।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): पारायण, होम, प्रसाद।

सालेपुर (उड़ीसा): पारायण तथा प्रभात में गीता के प्रत्येक श्लोक के अन्त में 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र-सम्पुट सहित आहुतियों द्वारा होम और सायंकाल में प्रवचन।

(२) अन्य विशेष गतिविधियाँ

हमें पावन कार्तिक माह के विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रमों के दो अधिक अहवाल प्राप्त हुए हैं : बरबिल् (उड़ीसा) शाखा ने पादुका-पूजन और पूर्णिमा को विविध कार्यक्रम। छत्रपुर (उड़ीसा) शाखा के 'श्री

राम-चरित मानस' (रामायण) के मास-पारायण के समापन-कार्यक्रम में आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी ने उपस्थित रह कर शोभावृद्धि की।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): कार्तिकी पूर्णिमा के कार्यक्रमों में कलश-स्थापन, सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त ४ प्रहरीय पूजा के साथ-साथ १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड महामन्त्र कीर्तन, पादुका-पूजा इत्यादि।

काशिबुग्ग (आन्ध्र प्रदेश): दिनांक १८ नवम्बर को ५० दम्पतियों ने रूद्राभिषेक सहित सामूहिक पूजा का परिचालन।

अहिवारा (छत्तीसगढ़): नूतन वर्ष के शुभारम्भ में दिनांक ३१ दिसम्बर को विशेष पूजा परिचालित की।

अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात): एक भजन-मण्डली द्वारा भक्ति-संगीत की प्रस्तुति के मध्य शाखा ने नूतन वर्ष का सम्मेलन रखा। पादुका-पूजन और प्रसाद-सेवन भी सम्पन्न हुए।

अम्बाला (हरियाणा): दिनांक ३१ दिसम्बर को सायंकालीन भव्य विशेष सत्संग।

भिलाई (छत्तीसगढ़): दिनांक ३१ दिसम्बर को पादुका-पूजन और सत्संग।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिल नाडु): शाखा के कार्यक्रमों में प्रार्थना, संकीर्तन, भजन, गुरु-पूजा, प्रवचन, नूतन वर्षीय संकल्प और प्रसाद-सेवन समाविष्ट थे।

अन्य विशेष कार्यक्रम निम्नानुसार हैं :

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथि को कार्यक्रम आयोजित किये।

घाटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़): शाखाओं ने आदरणीय श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी की पुण्य-तिथि को पादुका-पूजन, 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड कीर्तन सम्पन्न किये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा ने दिनांक १९ दिसम्बर से दिनांक २५ दिसम्बर पर्यन्त सात दिवसीय साधना-शिविर, 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का ७२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन तथा दिनांक २६ दिसम्बर, पुण्य-तिथि दिन को प्रभातफेरी, हवन, पादुका-पूजा, श्रद्धांजलि, पाँच आदरणीय संन्यासियों द्वारा प्रवचन, मन्त्रदीक्षा और १००० व्यक्तियों को भण्डारा आदि कार्यक्रम आयोजित हुए।

दिव्य जीवन संघ शाखाओं के दिसम्बर माह में दो प्रमुख महत्त्वपूर्ण दिन रहे। दिनांक ३ दिसम्बर को अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन ने ६१ वर्ष पूर्ण करके ६२ वें वर्ष में प्रवेश किया।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा ने महामन्त्र का अखण्ड १२ घण्टों पर्यन्त संकीर्तन आयोजित किया।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा ने दिनांक ३ दिसम्बर को महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन और श्री श्री विश्वनाथ मन्दिर के प्रतिष्ठा-महोत्सवह्वदिनांक ३१ दिसम्बर को 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का कीर्तन परिचालित हुए।

आरा (बिहार): गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने शाखा में महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन प्रेरित और आशीर्वादित किया था। इसका स्वर्ण-महोत्सव आरा में श्री हरिनाम संकीर्तन समाज ने भव्यरूपेण आयोजित किया। ४ दिवसीय कार्यक्रमों में 'श्री रामचरित मानस' का अखण्ड पारायण, कलश-स्थापन, वेदी-पूजन, ४९ घण्टों पर्यन्त विशाल भक्त-समुदाय द्वारा अखण्ड महामन्त्र कीर्तन, प्रवचन, महा-आरती, शोभा-यात्रा आदि समाविष्ट थे।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा ने श्री दत्तात्रेय जयन्ती को विशेष पूजा परिचालित की।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा ने १३ विशेष चल-सत्संग आयोजित किये।

लाडवा (हरियाणा): शाखा ने दिसम्बर माह के दिनांक १४ से दिनांक २२ पर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के मार्गदर्शन में एक योग-साधना शिविर आयोजित किया। प्रभातीय सत्र में योगासन-प्राणायाम वर्ग और सायंकालीन सत्र में ध्यान परिचालित हुए। आदरणीय श्री स्वामी जी ने दिनांक २० दिसम्बर को सम्पन्न विशेष सत्संग में 'पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी का तत्त्वज्ञान' विषय पर प्रवचन दिया।

लैईडम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने दिनांक ३ दिसम्बर को विशेष सत्संग आयोजित करके उसके पश्चात् पूजा, भगवद्गीता-पारायण, पादुका-पूजन, तथा गायत्री यज्ञ भी सम्पन्न किये। विशेष सत्संग में चार संन्यासियों ने तथा एक विद्वान् व्यक्ति ने भी प्रवचन दिये। आस-पास के ग्रामों में से आये हुए और प्रतिभागी हुए समस्त ५०० भक्तों को भोजन-प्रसाद दिया गया। दिनांक ४ दिसम्बर को उंजल सेवा भी आयोजित की जिसमें २०० से अधिक भक्तों ने भाग लिया।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने 'श्री चैतन्य रामायण' के स्वाध्याय सहित दो विशेष चल-सत्संग माह नवम्बर में आयोजित किये।

पटियाला (पंजाब): शाखा ने सितम्बर माह में शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित किये और एक कन्या विद्यालय की छात्राओं को और कुष्ठरोगियों की एक संस्था के अन्तेवासियों को मिठाइयाँ वितरित कीं।

सालेपुर (उड़ीसा): शाखा ने एक 'अध्ययन गोष्ठी' आरम्भित की है। आदरणीय श्री स्वामी शिवकृपानन्द जी नित्य डेढ़ घण्टोंह्मर्यन्त स्वाध्याय परिचालित करते हैं।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा ने नवरात्र की अवधि में दैनिक विशेष सत्संग तथा श्री ललिता सहस्रनाम के सहित अर्चना सम्पन्न किये। उन्होंने पूर्णिमा को पादुका-पूजन, हवन, भजन-कीर्तन भी परिचालित किये।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक २५ अक्तूबर को आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी की मुलाकात के उपलक्ष्य में विशेष सत्संग आयोजित किये। दिनांक २० नवम्बर को आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी के आगमन पर भी विशेष सत्संग आयोजित हुए।

विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने माह दिसम्बर २००६ की अवधि में विविध विशेष गतिविधियाँ आयोजित कीं। दिनांक ५ से दिनांक १२ पर्यन्त के योगासन-प्राणायाम-ध्यान शिविर में १२५ छात्रों ने भाग लिया। दिनांक १६-१७ को योग-तालीम कैम्प भी आयोजित हुआ और दिनांक २० को **भद्राचलम्** में एक विशेष सत्संग परिचालित किया गया। दिनांक २६ के युवा-कैम्प में १५० छात्रों और १० शिक्षकों ने भाग लिया।

नियमित गतिविधियाँ

हाल ही में जिन शाखाओं की नियमित गतिविधियाँ प्रकाशित नहीं हुई हैं, उनकी गतिविधियाँ निम्नानुसार हैं :

भवानीपाटना (उड़ीसा): दैनिक पूजा और मातृ सत्संग के आधिक्य में शाखा प्रति गुरुवार को और रविवार को साप्ताहिक द्विवार सत्संग आयोजित करके प्रति माह के शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजन सम्पन्न की जाती है। शाखा की दो संस्थाएँह्हह'स्वामी चिदानन्द विद्यापीठ' तथा 'स्वामी शिवानन्द बाल-विकास विद्यापीठ'ह्हसन्तोषकारक कार्य कर रही हैं।

काशिबुग्ग (आन्ध्र प्रदेश): शाखा की नियमित गतिविधियों में ब्राह्ममुहूर्त ध्यान सभा है, जिसके अनुसरण में महामन्त्र संकीर्तन, प्रभातफेरी तथा सायंकाल में दो घण्टों पर्यन्त श्रीमद् भागवत कथा। प्रति शनिवार को लगभग १०० निराश्रितों को अन्नदान किया जाता है। शाखा के शिवानन्द आश्रम के दिनांक ८ दिसम्बर के स्थापना-दिन को अनेक शाखाओं के ५०० भक्तों ने श्रीमद्भगवद्गीता-पारायण तथा इतर कार्यक्रमों में भाग लिया। प्रत्येक ने प्रसाद लिया।

नाभा (पंजाब): शाखा के चल-सत्संग को अति-सुन्दर प्रतिभाव मिला है। अब शाखा मुख्यालय के आध्यात्मिक कैलेंडर अनुसार सर्व अवसरों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

तनाराडा (उड़ीसा): शाखा प्रति गुरुवार को साप्ताहिक तथा संक्रान्ति-दिन को विशेष मासिक सत्संग परिचालित करती है। सितम्बर माह में शाखा ने शिवानन्द-जयन्ती तथा चिदानन्द-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित किये।

हमें निम्नानुसार शाखाओं के भी उनकी नियमित गतिविधियों के अहवाल प्राप्त हुए हैं : अहिवारा (छत्तीसगढ़), अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात), अम्बाला (हरियाणा), बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा), बरबिल् (उड़ीसा), बेलगुंठा (उड़ीसा), बल्लारि (कर्नाटक), भजंनगर (उड़ीसा), भिलाई (छत्तीसगढ़), भीमकाण्ड (उड़ीसा), भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश), बीकानेर (राजस्थान), छत्रपुर (उड़ीसा), घाटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़), गोपालपुर_(तमिल नाडु), कंटाबाँजी (उड़ीसा), खाटिगुडा (उड़ीसा), नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश), नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़), नई दिल्लीह्वसन्त विहार, राउरकेला (उड़ीसा), राउरकेला स्टील टाउनशिप (उड़ीसा), सालेपुर (उड़ीसा), सुनाबेडा (उड़ीसा), सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा), वाराणसी (उत्तर प्रदेश), विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश)।

विदेशी शाखाएँ

ब्राजील : दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की ब्राजील यात्रा की अवधि में शाखा ने निम्नांनुसार विविध कार्यक्रम आयोजित किये :

<u>नवम्बर २४, २५ और २६ :</u> तीन दिवसीय योग-ध्यान सत्र, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, योगासन और प्राणायाम, श्रीमद् भगवद् गीता पर प्रवचन, प्रश्न-उत्तर सत्र, सत्संग।

<u>२१ नवम्बर :</u> ध्यान, 'योग तथा आध्यात्मिकता' पर प्रभात में प्रवचन, सायंकाल में सत्संग।

शेष पृष्ठ २२ पर---

पृष्ठ १९ से आगे---

२२ नवम्बर : ध्यान, प्रभात में प्रश्न-उत्तर, सायंकाल में प्रवचन तथा ध्यान।

२३ नवम्बर : योगासन वर्ग, भगवद्गीता पर प्रवचन, मार्गदर्शित ध्यान, एक प्रवचन।

२८ नवम्बर : ध्यान, योग-शिक्षकों के हेतु एक तालीम अभ्यासक्रम, योगासन-प्राणायाम पर वर्कशाप।

१ दिसम्बर : योगासन-प्राणायाम।

२ दिसम्बर : ध्यान, दृश्य-श्राव्य कैसेट सत्संग, योगासन-प्राणायाम वर्ग, प्रश्न-उत्तर, आध्यात्मिक प्रवचन, सत्संग।

३ दिसम्बर : योगासन-प्राणायाम, अन्य एक केन्द्र पर योगासन-प्राणायाम वर्कशाप, सान्ध्य-सत्संग।

कार्यक्रमों का आयोजन शाखा में, इसके दो केन्द्रों में, दो अन्य संस्थाओं में तथा अन्य स्थलों पर भी हुआ।

आस्ट्रेलिया : सिडनी में हर माह के प्रथम रविवार को मासिक सत्संग नियमित रूप से आयोजित होता है। श्री गुणवन्त वाघेला जी भी पुस्तकालय की सेवा दे रहे हैं तथा दिव्य जीवन संघ की समस्त पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं एवं वाचन के हेतु दी जाती हैं। मेलबोर्न में मासिक सत्संग प्रथम शनिवार को सम्पन्न होता है। श्री विजय गोकर्ण जी इस्टवूड में पुस्तकालय की सुविधा देते हैं। आध्यात्मिक गतिविधियों के कुछ केन्द्र निम्नानुसार हैं : मोलोय शिवानन्द आश्रम, नार्थ कवीन्सलैंड, बेकम योग केन्द्र, पर्थ और शिवानन्द योग-वेदान्त केन्द्र, कटुम्बा।

मलेशिया : (१) दिनांक १ सितम्बर से दिनांक ५ सितम्बर की अवधि में आयोजित इस आध्यात्मिक शिविर में आदरणीय श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी ने योग के चार मुख्य प्रकारों पर प्रवचन दिये। आदरणीय श्री ब्रह्मचारी प्रेमचैतन्य जी ने भजन-कीर्तन तथा स्लाइड-शो परिचालित किये। पूज्य स्वामी जी ने 'हिन्दुत्व तथा कर्म का सिद्धान्त और पुनर्जन्म' विषयक प्रवचन दिये। (२) जोहोर बाहरु सब-सेंटर ने दिनांक १९ नवम्बर को एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया। पूज्य स्वामी जी ने 'जपयोग का महत्त्व' विषयक प्रवचन दिया। (३) बालकों का आध्यात्मिक कैम्प दिनांक ८, ९ और १० दिसम्बर को बाटु केव्ज के शिवानन्द आश्रम में आयोजित हुआ। वय १० से १४ के वय-ग्रुप के इस कैम्प में ४० बालकों ने भाग लिया। (४) मुख्य शाखा द्वारा १ से ८ दिसम्बर तक १४ से १८ आयु-वर्ग के बच्चों का एक योग कैम्प आयोजित किया गया, जिसमें १० उपशाखाओं के ७४ बच्चों ने भाग लिया। इसमें आदरणीय श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी तथा आदरणीय श्री स्वामी मुमुक्षुआनन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी स्कन्दप्रियानन्द माता जी, आदरणीय श्री स्वामी स्वयंजयानन्द जी तथा अन्य पाँच विद्वानों ने ११ प्रवचन दिये। (५) दिनांक २४, २५ और २६ नवम्बर को शिवानन्द आश्रम में अन्य एक धार्मिक शिविर आयोजित हुआ। (६) रावंग उपशाखा ने दिनांक १६ सितम्बर को वयमर्यादा ८-१२ के ४० बालकों के लिए 'बाल-रोग शिविर' सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। (७) दिव्य जीवन संघ की युवा शाखा में दिनांक नवम्बर १७, १८ और १९ को 'नेतृत्व-विकास शिविर' आयोजित हुआ, जिसमें वयमर्यादा १४ से १८ के युवानों ने भाग लिया।

पर्व तथा विशिष्ट अवसर : (१) शिवानन्द-जयन्ती : शिवानन्द-जयन्ती के कार्यक्रमों का प्रारम्भ ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान से किया गया, जिसके अनुसरण में अखण्ड नाम, भजन, पादुका-पूजा, प्रभात के सत्र के पश्चात् मध्याह्न-भोजन एवं भजन-प्रस्तुति, पूज्य स्वामी जी द्वारा भावांजलि, आरती और प्रसाद के साथ विशेष सान्ध्य-सत्र सम्पन्न हुआ। (२) चिदानन्द-जयन्ती : चिदानन्द-जयन्ती को भी शिवानन्द-जयन्ती के समानान्तर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। (३) ओणम पर्व : ओणम पर्व का उत्सव सेगामट उपशाखा द्वारा सम्पन्न किया गया। (४) नवरात्र-पूजा : आश्रम में, उपशाखा बंडरकंट्री होम में तथा अन्य उपशाखाओं में दिनांक २३ सितम्बर से दिनांक १ अक्तूबर की समयावधि में देवी की वार्षिक पूजा भव्यरूपेण हुई। दैनिक पूजा, देवी-माहात्म्य तथा देवी-स्तोत्रों का पारायण आदि के आधिक्य में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। (५) दीपावली : दिनांक ८ अक्तूबर को निर्धन जनों को वार्षिक मिष्टान्न परोसा गया। अन्न-पैकेट, कोरा राशन, साड़ी-धोती आदि ४०० अकिंचन जनों को तथा स्कूल-यूनिफार्म १०० अकिंचन छात्रों को वितरित हुए। स्कूल-छात्रों के लिए अन्य कार्यक्रम में सांस्कृतिक नृत्य, संगीत, जादू के खेल आदि आयोजित हुए और उपस्थित ३०० छात्रों को मिठाई के पैकेट दिये गये। (६) श्री स्कन्द-पूजा : दैनिक कार्यक्रमों में पूजा, 'कन्दर अनुभूति' का पाठ, भजन, अभिषेक आदि समाविष्ट थे। सप्तम दिन को ५० से अधिक भक्तों ने उपवास किया एवं दुग्ध-पात्रों के साथ वे बाटु केव्ज गये और अभिषेक किया। (७) गीता-जयन्ती : आश्रम के छह घण्टों के कार्यक्रम में ५०० से अधिक भक्तों ने गीता-पाठ किया। लाहट उपशाखा ने वार्षिक संगीत-सन्ध्या सम्पन्न की और ४०० से अधिक अतिथियों ने दीपावली-उत्सव में भोजन लिया। (८) सामाजिक सेवा : २५ निर्धन और आवश्यकतापूर्ण परिवारों को मासिक अन्न-पार्सल वितरित हुए। रामायण पर प्रवचन दिये गये। दिनांक १ दिसम्बर को आदरणीय स्वामी जी तथा अन्य महानुभावों ने शिवानन्द केन्द्र अनाथालय में विशेष पूजा और हवन में निज उपस्थिति दी। (९) अन्य गतिविधियाँ : युवा-विभाग ने ९० युवाओं के साथ भजन-यात्रा की। □

सूचना

श्री रामनवमी महोत्सव

श्री रामनवमी का पवित्र त्योहार भगवान् श्री विश्वनाथ मन्दिर में **२७ मार्च २००७** को मनाया जायेगा। **१९ मार्च से २७ मार्च २००७** तक पवित्र श्री राम-मन्त्र का सामूहिक जप होगा। अन्तिम दिन लोक-कल्याण और विश्व-शान्ति तथा भक्तों के वैयक्तिक कल्याण के लिए विशेष संकल्प से यज्ञ किया जायेगा। अर्चना के साथ सायंकाल को आश्रम के सत्संग में एक विशेष प्रार्थना सभा भी होगी। जो भक्त श्री रामनवमी महोत्सव में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे कृपया **'महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पत्रालय शिवानन्दनगर, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२'** से सम्पर्क करें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय में विशेषज्ञों की सेवा प्राप्त करने हेतु एक अपील

गंगा माता के तट पर स्थित शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ (मुख्यालय), शिवानन्दनगर के शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय में अभावग्रस्त व्यक्तियों तथा रोगियों की सेवा पूज्य गुरुदेव के मिशनरी उत्साह से की जाती है। इस चिकित्सालय में निम्नलिखित क्षेत्रों के योग्यता-प्राप्त तथा दक्ष आयुर्विज्ञान-कार्यकर्ताओं (मेडिकल प्रोफेशनल) की आवश्यकता है :

१. मेडिकल आफीसर	**२. सर्जन**
३. एनेसथेटिस्ट	**४. पेडियाट्रिशियन**
५. फारमेसिस्ट	**६. लेबोरेटरी टेक्नीशियन**

आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के इच्छुक पूज्य गुरुदेव के शिष्यों तथा साधकों से निवेदन है कि वे इस अपील का उत्तर दें। चयनित व्यक्तियों के आवास तथा भोजन की व्यवस्था मुख्यालय की ओर से की जायेगी। उनकी प्रेममयी सेवा के उपलक्ष्य में उन्हें मासिक मानदेय भी दिया जायेगा। वे आश्रम के दैनिक आध्यात्मिक कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।

हम सेवा-निवृत्त, अपने-अपने आयुर्विज्ञान-क्षेत्रों के अनुभवी तथा स्वस्थ व्यक्तियों को अपनी सेवाएँ प्रदान करने हेतु आवेदन-पत्र भेजने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क रु. १५०/-

प्रवेश-शुल्क . . . . रु. ५०/-

सदस्यता-शुल्क . . . . .रु. १००/-

२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक) रु. १००/-

३. नयी शाखा खोलने का शुल्क* रु. १०००/-

प्रवेश-शुल्क . . . . .रु. ५००/-

सम्बद्धता-शुल्क . . . . .रु. ५००/-

४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) रु. ५००/-

५. आजीवन सदस्यता-शुल्क रु. ३,०००/-

६. संरक्षकता-शुल्क रु. १०,०००/-

⇨ कृपया सदस्यता-शुल्क तथा शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश के बैंक में देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

* नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

महत्त्वपूर्ण सूचना

कृपया सभी धन-राशि पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा "The Divine Life Society" Shivanandanagar, Uttaranchal के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक का देय "Rishikesh" के अन्तर्गत निम्नलिखित बैंक में होना चाहिए :

"State Bank of India, Punjab National Bank, Punjab and Sind Bank, Union Bank of India, State Bank of Patiala, Oriental Bank of Commerce, Canara Bank, Indian Overseas Bank, Bank of India, Bank of Baroda."

✻ राशि भेजने का हेतु अवश्य लिखें ।

✻ यदि आपकी राशि रु. २००/- से अधिक हो, तो आप निजी चेक (Personal Cheque) भेज सकते हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

विशेष छूट

१ जनवरी २००७ से ३० जून २००७ तक

यह सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है कि हमने छूट की दरों में परिवर्तन कर दिया है :

पुस्तकों पर छूट

१०० रु. तक की पुस्तकों पर कुछ नहीं
५०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर १०%
५०१ रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

सीडी, कैसेटों तथा वीसीडी पर छूट

किसी भी मूल्य की खरीद पर २०%
('Chidananda—The fountain of Grace; Guru Purnima Darshan 2006' को छोड़ कर)

पैकिंग तथा डाक-व्यय अतिरिक्त।
सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।
यह छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

ह्व ० ह्व

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लीकेशन लीग
पोस्ट : शिवानन्दनगरह्व२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तरांचल (हिमालय), भारत
फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: managerspl@hotmail.com

---

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के आगामी कार्यक्रम

क्रमांक	तिथि	स्थान	कार्यक्रम
१	१० फरवरी से १६ फरवरी २००७	गान्धीनगर (गुजरात)	योग शिविर
२	१७ फरवरी से २३ फरवरी २००७	मेहसाना (गुजरात)	मेडिकल विद्यार्थियों के लिए योग शिविर
३	२५ फरवरी से ३ मार्च २००७	जामनगर (गुजरात)	जन-स्वास्थ्य के लिए योग
४	५ मार्च से ११ मार्च २००७	अहमदाबाद (गुजरात)	वरिष्ठ नागरिकों के लिए योग
५	१२ मार्च से १८ मार्च २००७	वडोदरा (गुजरात)	योग शिविर
६	२२ मार्च से २८ मार्च २००७	लाडवा दिव्य जीवन संघ शाखा (हरियाणा)	योग शिविर
७	१ अप्रैल से ७ अप्रैल २००७	देहरादून, दिव्य जीवन संघ शाखा, कौलागढ़	योग शिविर
८	१० अप्रैल से १६ अप्रैल २००७	धर्मगढ़ (उड़ीसा)	क्षेत्रीय दिव्य जीवन संघ सम्मेलन
९	२० अप्रैल से २६ अप्रैल २००७	मलाड (मुम्बई)	स्ट्रेस निवारण तथा योग शिविर
१०	२८ अप्रैल से ७ मई २००७	जालन्धर (पंजाब)	योग शिविर तथा सत्संग